अध्यापक शिक्षा में संचार माध्यमों की प्रासंगिकता

धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग
पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ–312605, उ0प्र0, भारत
dps@gmail.com

प्राप्त तिथि 22.05.2015, स्वीकृत तिथि 10.09.2015

देश की भौगोलिक संरचना ही इसकी विभिन्न विविधताओं का मूल कारण है। यह भौगोलिक संरचना ही है जिसके परिणामस्वरूप इस देश के नागरिकों की जीवन शैली तथा संस्कृति व सामाजिक स्वरूप अलग–अलग हैं। कहीं पर समतल मैदानी क्षेत्र तो कहीं पर पहाड़ी क्षेत्र हैं। जिसके कारण मानव अपने–अपने तरीके से जीवन यापन के अनुरूप विकल्पों का चयन करता है। मानव समुदाय क्षेत्र के अनुरूप सर्वोत्कृष्ट विकल्पों का उपयोग करता है और उन्ही विकल्पों के परिवहन हेतु तत्पर रहता है। मानव समुदाय क्षेत्र के विकल्पों का उचित उपयोग करते हुए अपने जीवन स्तर में सुधार के लिए सदैव तत्पर रहता है तथा उपलब्ध साधनों का बेहतर उपयोग करता है। इन्हीं प्रयासों का प्रतिफल मानव जीवन स्तर में सुधार के रूप में मिलता है। मानव जीवन इन्हीं संगत साधनों के आधार पर ही अपनी उत्कृष्टता पर पहुँचता है। मानवीय प्रगति एवं उसमें चिन्तन के नवीनतम दृष्टिकोण के विकास हेतु शिक्षा एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण साधन है। अध्यापक शैक्षिक संरचना का एक महत्वपूर्ण ध्रुव है। शिक्षा की प्रक्रिया की सफल संचालन में शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। शिक्षा की प्रभावशीलता एवं शिक्षार्थी की कुशलता में शिक्षक की दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि किसी राष्ट्र ने उन्नति के चरम को छुआ है तो इसमें उसकी शैक्षिक व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा न केवल राष्ट्र की प्रगति की सूचक है, बल्कि यह व्यक्ति एवं समाज की भी दशा एवं दिशा निर्धारित करती है। समाज को उन्नति के शिखर तक पहुँचाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक की होती है। शिक्षक अपने ज्ञान को जिस सीमा तक बढ़ा सकता है। तथा उसे जितनी मात्रा तक अद्यतन रख सकता है वही उसकी शिक्षण कुशलता का मूल मंत्र होता है।

वर्तमान में वैश्वीकरण के दौर में ज्ञान को अद्यतन रखने में सूचना एवं संचार तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में सूचना तकनीकी ने स्वतंत्र बाजार निर्मित किया है। जिसमें विद्यार्थी अपनी रूचि एवं आवश्यकता के अनुरूप ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। तथा अपने कौशलों का विकास कर सकते हैं। विषय से सम्बनधित अद्यतन शोधों, सुदूर बैठे प्रबुद्ध विशेषज्ञों से राय प्राप्त करने हेतु सूचना तकनीकी अत्यन्त उपयोगी माध्यम है। इसके अतिरिक्त शिक्षण के लिए अनुकूल वातावरण बनाने, उपयोगी एवं व्यवहारिक मॉड्यूल का विकास करने में विद्यालय में प्रबंधतंत्र का संचारतंत्र से संयोजन करने हेतु सूचना तकनीकी अत्यन्त उपयोगी माध्यम है।

शैक्षिक संरचना के मात्रात्मक गुणात्मक आवश्यकता के अनुरूप अध्यापक शिक्षण संस्थाओं में तकनीकी माध्यम का प्रयोग करके शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। तकनीकी शिक्षा के विस्तार और प्रशिक्षित जनशक्ति के निर्माण हेतु सूचना और प्रौद्योगिकी के द्वारा कम लागत की कम्प्यूटर प्रणाली ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर, कैम्पस में तीव्रगति से कार्य करने वाले इन्टरनेट सुविधा, भरोसेमंद तथा किफायती कनेक्टिविटी, सूचना प्रौद्योगिकी के पाठ्क्रमों पर आधारित उपकरणों का प्रयोग, प्रबंधन टूल्स, माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम पैकेजिंग आदि नवीन कार्यक्रमों को शिक्षक शिक्षा से जोड़कर प्रस्तुत किया जाना चाहिए। जिससे छात्रों में एक प्रयोगात्मक मस्तिष्क का विकास हो सके तथा उनकी कार्यशीलता एवं कौशल का समुचित विकास हो सके। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मुख्यतः दूरसंचार तकनीकी अधिक प्रभावी एवं उपयोगी हो सकती है। उसे दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– 1. एकांगी संचार तकनीकी, 2. द्विमुखी संचार तकनीकी।

एकांगी संचार तकनीकी के अन्तर्गत ऑडियो/वीडियो ग्राफिक्स ऑडियों, वीडियो कैसेट, रेडियो, टेलीविजन, लेजर वीडियो आदि आते हैं। द्विमुखी संचार तकनीकी के अन्तर्गत पत्राचार एवं टेली कान्फ्रेंसिंग मुख्य रूप से आते हैं। रेडियो तथा टेलीविजन अध्यापक शिक्षा में अनुप्रयोग होने वाला एक सशक्त संचार माध्यम है। इसका प्रयोग दूरस्थ शिक्षा के विकास में सुदूर क्षेत्रों अध्यापक शिक्षा को प्रभावशाली ढंग से ग्रहण करने हेतु किया जा सकता है। टेली कान्फ्रेंसिंग अलग–अलग समूहों एवं स्थानों पर रहने वालें लोगो के मध्य आमने–सामने का संवाद उत्पन्न करने का प्रभावशाली एवं उपयोगी माध्यम है। इसके द्वारा सुदूर एवं विदेशों में बैठे शिक्षा विशेषज्ञों से किसी समस्या पर राय एवं जानकारी ली जा सकती है। अध्यापक शिक्षा में टेली कॉन्फ्रेंसिंग का प्रयोग गुणवत्ता संवर्धन अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। आधुनिक संचार तकनीकी के प्रयोग से अध्यापक शिक्षा को नवीनतम एवं उपयोगी तथा रुचिकर बनाया जा सकता है। इन तकनीकियों का प्रभाव केवल मात्रात्मक एवं गुणात्मक रूप से ही नहीं पड़ता बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से छात्रों की सोच को सकारात्मक बनाता है । नवीन ज्ञान प्राप्त करना और उसका मानवीय हित में अनुप्रयोग करना सृजनात्मकता एवं कौतूहल का परिणाम है। मुद्रित सामग्री छात्रों में यह कौतूहल उत्पन्न नहीं कर पाती। अतः संचार माध्यम अधिक प्रभावी एवं कारगर हो सकते हैं। अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में

संचार माध्यम की उपयोगिता मानकीकृत अध्यापक शिक्षा के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रयोग से अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में नवीनता लाने छात्रों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक चिन्तन विकास करने तथा वैश्विक मानसिकता का विकास करने में संचार माध्यम अत्यन्त उपयोगी हैं।

संचार माध्यमों की उपयोगिता वर्तमान में अध्यापक शिक्षा के अध्यापन से लेकर मूल्यांकन तक अपनी भूमिका निभाता है। शिक्षण में नवीनता, उत्पादकता एवं प्रभावशीलता हेतु संचार माध्यमों का उपयोग अत्यन्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम को निर्धारित समयावधि के अन्दर पूर्ण करने तथा छात्रों की क्रियाओं का समुचित निरीक्षण करने एवं उसका मूल्यांकन करने हेतु अध्यापक शिक्षा में संचार माध्यमों का अनुप्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में छात्रों को प्रयोगात्मक कार्यों में रूचि उत्पन्न करने एवं सामुदायिक कार्यक्रमों में सहभाग करने एवं बी0एड0 कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने हेतु संचार माध्यमों की उपयोगिता महत्वपूर्ण है। जैसे– शिक्षक द्वारा मौखिक व्याख्यान के स्थान पर ओवर हेड प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षण करने पर छात्रों की ग्रहणशीलता एवं ध्यान अधिक आकर्षित होता है। इसी प्रकार रेडियो एवं टेलीविजन के माध्यम से तथा वीडियो से तथा वीडियो एवं शैक्षिक सी0डी0 आदि के प्रयोग से छात्रों में ज्ञान प्राप्त करने की रूचि एवं जिज्ञासा का विकास होता है। यद्यपि अध्यापक शिक्षा में संचार माध्यम की उपयोगिता अत्यन्त महत्वपूर्ण है किन्तु इसके प्रति सकारात्मक मानसिकता के अभाव में इसका अनुप्रयोग अत्यन्त सीमित मात्रा में ही हो पाता है। अधिकांश शिक्षकों द्वारा इसकी औपचारिक प्रकृति को आधार बनाकर इसका विरोध किया जाता है। किन्तु वर्तमान वैश्विक शैक्षिक संरचना के दौर में उपयोगी एवं प्रतिस्पर्धी शैक्षिक व्यवस्था का विकास करने में संचार माध्यम अत्यन्त उपयोगी है। इसके लिए शैक्षिक संचार कार्यक्रमों के प्रति शिक्षकों एवं प्रशासकों में विश्वास एवं आस्था पैदा करने आवश्यकता है तभी अध्यापक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जाना सम्भव है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में विश्व में अपना मानक स्थापित करने हेतु गुणवत्तापूर्ण अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था करना अनिवार्य है। क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा शस्त्र है जो प्रतिस्पर्धा के दौर में विजय दिला सकता है। यदि 21वीं सदी में हम किसी विपत्ति से घिरना नहीं चाहते तो अध्यापक शिक्षा को मजबूत गुणवत्तापरक एवं तकनीकी दृष्टिकोण से सशक्त बनाना होगा, क्योंकि तकनीकी एवं संचार माध्यम के प्रयोग से ही अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को सरल, रूचिपूर्ण, सर्वसुलभ एवं गुणात्मक बनाया जा सकता है। संचार माध्यमों की उपयोगिता को दृष्टि में रखकर एक सार्थक एवं उपयोगी शैक्षिक नीति का निर्माण कर अध्यापक शिक्षा के विस्तार एवं गुणात्मक सुचार हेतु प्रभारी उपाय किये जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्र, करूणाशंकर, भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. गुप्ता, एस0 पी0, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. भारत–2007, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. योजना(सितम्बर–2007), प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. कुरूक्षेत्र(2005), प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. सिंह, सुनील प्रताप एवं सिंह, दिनेश(2006) अध्यापक शिक्षा की चुनौती, शोध प्रपत्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
7. भदौरिया, मृदुला(2004) वर्तमान संदर्भों में भारतीय उच्च शिक्षा, नीपा, दिसम्बर–2004, अंक–3।